शिक्षकों की फ़िक्र और देखरेख द्वारा एक स्कूल का रूपान्तरण

सुनीता सुरेशराव

बच्चों को कुछ भी सीखने में समर्थ बनाने के लिए और उनके सम्पूर्ण विकास में सहयोग देने के लिए सामाजिक और भावनात्मक रूप से सहायक व प्रेरक वातावरण सबसे पहली ज़रूरत होती है। इस लेख में मैं, कन्नड़ा बॉयज़ स्कूल (केबीएस), विजयपुरा के बच्चों के अनुभवों और बेहद कठिन स्थितियों के बीच उन्हें भावनात्मक सहारा देने के लिए उनके शिक्षकों के रचनात्मक व सकारात्मक प्रयासों के बारे में बताना चाहूँगी। आपराधिक मामले, शराब की लत, किसी एक अभिभावक की मृत्यु और परित्याग उनके कुछ ऐसे मसले हैं जो उन पर गहरे भावनात्मक घाव छोड़ जाते हैं। इस वजह से उनके शिक्षकों को सजग रहने की ज़रूरत होती है ताकि वे उन्हें भावनात्मक सहारा दिए जाने की ज़रूरत को पहचान सकें और सहारा दे सकें। यह भावनात्मक सहारा न केवल उनकी पढ़ाई के लिए ज़रूरी है बल्कि इसलिए भी कि वे परिपक्व व आत्मनिर्भर वयस्क बन सकें।

बच्चों का सन्दर्भ और उनकी पृष्ठभूमि

विजयपुर (पहले बीजापुर के नाम से जाना जाता था) के अधिकांश लोग खेतीबाड़ी पर निर्भर हैं। लेकिन, समय पर वर्षा के अभाव की वजह से उन्हें रोज़ी-रोटी की तलाश में दूसरे ज़िलों में बसना पड़ा है। दूसरे राज्यों से रोज़ी-रोटी की तलाश में इस शहर आए लोग छोटे-मोटे काम करके जी रहे हैं। फलस्वरूप, रेलवे स्टेशन के पास के एक स्कूल में शहर के अलग-अलग हिस्सों से बच्चे आते हैं। इनमें से बहुत-से बच्चे माता-पिता द्वारा उपेक्षित किए जाने के साथ-साथ एक ही अभिभावक द्वारा पाले जा रहे हैं। बच्चों की देखभाल से कुछ घण्टों की आज़ादी पाने से लेकर उस समय का उपयोग दैनिक मज़दूरी के लिए करने तक, अभिभावकों के पास बच्चों को स्कूल भेजने के बहुत-से कारण हैं। इनमें से एक सच यह भी है कि स्कूल में होने से उन्हें एक वक़्त का खाना (मध्याह्न भोजन योजना के तहत) मिलना तो तय हो ही जाता है।

पहले से ही आर्थिक कठिनाइयों से जूझते इन समुदायों को महामारी ने गहरी चोट पहुँचाई है। इस स्कूल में आने वाले अलग-अलग परिवारों के दो बच्चों ने कोविड-19 महामारी में अपनी माँओं को खो दिया। एक बच्चे के परिवार में तो चार बच्चे हैं जो 1-5वीं तक की कक्षाओं में पढ़ते हैं। उनका पिता, जो दैनिक मज़दूर है, हर रात देर से नशे में धुत घर आता है। उसे अपने बच्चों की कतई परवाह नहीं है। बच्चे बहुत छोटे हैं। उन्हें खाना खिलाने, नहलाने और कपड़े पहनाने के लिए किसी की मदद की ज़रूरत पड़ती है। वे फटे-पुराने मैले कपड़े पहनकर बिना नाश्ता किए ही स्कूल आते हैं। महामारी के समय हालत और भी बदतर थे, क्योंकि उनके पिता के पास कोई काम नहीं था। चूँकि स्कूल भी बन्द थे तो उन्हें दिन में एक भी वक़्त का खाना नहीं मिलता था। दूसरे बच्चे की एक प्री-स्कूल उम्र की बहन है। हालाँकि उसके पिता उन दोनों का ख़्याल रखते हैं लेकिन उस बच्चे को अपनी छोटी बहन को साथ लेकर आना पड़ता है और उसे सारा दिन स्कूल में अपने साथ ही रखना पड़ता है।

इस तरह की उपेक्षा, उचित देखभाल और सहारे के अभाव की वजह से, बच्चे स्कूल में कुछ नहीं सीख पाते। आजीविका का छूट जाना, शराब की लत और एकल अभिभावक द्वारा पालन कुछ ऐसी स्थितियाँ हैं जिनका बच्चों पर बहुत गहरा असर पड़ता है।

शिक्षकों के प्रयास

स्कूल में कक्षा 1-7 तक 81 बच्चे हैं और ज़्यादातर बच्चे एक जैसे हालातों से जूझ रहे है। पर फिर भी, स्कूल के तीन शिक्षकों ने इस स्थिति से निबटने के लिए अपने ही तरीक़े निकाल लिए हैं। उन सबको बच्चों की फ़िक्र व परवाह है और इसलिए उन्होंने सबसे पहले अपने आप को कक्षा के बच्चों की पृष्ठभूमियों से अवगत किया। तीन में से एक शिक्षक नली-कली कक्षाओं के लिए, एक कक्षा-4 और 5 के लिए और एक कक्षा-6 और 7 के लिए, बच्चों को सिखाने और उनके सम्पूर्ण विकास को मद्देनज़र रखते हुए एक टीम की तरह दिन-रात मेहनत करते रहते हैं। पहले क़दम के तौर पर, जिन परिवारों में नौकरी के अभाव और मृत्यु की वजह से ग़रीबी पनपी थी, उनके लिए उन्होंने राशन की व्यवस्था की।

उन्होंने स्कूल में व बच्चों को पढ़ाने के तरीक़ों में कुछ बदलाव लाने की दिशा में भी क़दम उठाए। उदाहरण के तौर पर, एक परिवार के दो बच्चे स्कूल आते हैं, उनमें से एक कक्षा-3 में पढ़ता है और दूसरा चार साल का है जिसकी देखभाल पूरे समय स्कूल के दूसरे कर्मचारी करते हैं। हालाँकि इस परिवार की प्रशंसा की जा सकती है कि यह अपने दोनों बच्चों को

नियम से स्कूल भेजता है, लेकिन दोनों बच्चों का एक साथ आना एक समस्या बन जाता है। दूसरे मामले में, दो बच्चे, जिनकी माँ गुज़र चुकी है, बिना नाश्ता किए ही स्कूल आ जाते थे। वे अस्त-व्यस्त से आते थे और उन्हें स्कूल अनुशासन का कुछ पता नहीं था। ऐसे में बड़े बच्चों को, शिक्षक द्वारा दिए गए तेल, कंघी और शीशे से, उन दोनों के बालों में तेल लगाकर उन्हें तैयार करने की ज़िम्मेदारी दे दी गई। स्कूल द्वारा दी गई यूनिफॉर्म से बच्चों को बहुत मदद मिली क्योंकि उनके पास पहनने के लिए ठीक-ठाक कपड़े भी नहीं थे।

अपनी सारी निजी समस्याओं के बावजूद, बच्चों ने इस साल पिछली दो कक्षाओं के सीखने के परिणामों को सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है। ऐसा सिर्फ़ शिक्षकों के लगातार उत्साहवर्धन की वजह से ही सम्भव हो पाया है। चूँकि हर बच्चे को 'हर एक की क्षमता अनुसार' वाले तरीक़े से पढ़ाया जा रहा है, ऐसा देखने में आया है कि कक्षा के अधिकतर बच्चे तेज़ी से सीख पा रहे हैं। और चूँकि तीनों शिक्षक सीखने के नवीनीकृत परिणामों से परिचित हैं, पूरक पद्धतियों, जैसे कि पढ़ाने के शिष्टाचार, को भी कक्षा की प्रक्रियाओं में अपनाया जा सकता है। शिक्षक पढ़ने-पढ़ाने के उपकरण (TLM) भी बनाते हैं व सीखने को प्रभावशाली बनाने के लिए उनका इस्तेमाल करते हैं (**चित्र 1-3**)।

भावनात्मक सहारे को सुनिश्चित करना

नली-कली कक्षाओं में पढ़ने वाले वे तीन बच्चे, जिनकी माँ गुज़र चुकी थी, शुरू-शुरू में यदि शिक्षक उनकी पढ़ाई को लेकर ज़रा-सा भी कुछ सख़्ती से कह देते तो वे एकदम से अपनी माँ को याद करके आँसुओं से भर जाते थे। इसलिए, शिक्षकों ने इस बात का बहुत ध्यान रखा कि वे उनके साथ नम्र बने रहें, उन पर व्यक्तिगत ध्यान दें और उन्हें अपनी फ़िक्र जताएँ। माँ-बाप द्वारा बच्चों की किताबों का ख़र्च न उठा पाने से लेकर बच्चों का अपनी चीज़ों का ध्यान न रख पाने तक, शिक्षकों के लिए भी स्थिति बहुत कठिन रही है लेकिन उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि वे दया, धैर्य, उत्साहवर्धन और छोटी-से-छोटी उपलब्धि की प्रशंसा द्वारा एक आपसी सहयोग का वातावरण बनाए रखें।

सारे बदलावों और सीखने की प्रगति का श्रेय शिक्षकों की बच्चों और उनके माँ-बाप के साथ हुए संवादों, गतिविधि-आधारित शिक्षा, हर एक बच्चे के सीखने के स्तर पर आधारित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और बच्चों के साथ प्यार व सम्मान के व्यवहार को दिया जा सकता है।

उपस्थिति और घर के दौरे

नियमित उपस्थिति बहुत ज़रूरी है, इसलिए जब भी कोई बच्चा लगातार तीन दिन तक नहीं आता तो शिक्षक माता-पिता को फ़ोन करके बच्चे के बारे में पूछताछ करते हैं। इससे माँ-बाप को तसल्ली होती है कि शिक्षक को हमारे बच्चों की परवाह है।

हर एक-दो महीने में माता-पिता के साथ मीटिंग रखी जाती है जहाँ बच्चों के प्रदर्शन के बारे में बातचीत की जाती है। यदि माता-पिता मीटिंग में नहीं आते तो शिक्षक उनके घर जाते हैं ताकि वे माता-पिता के साथ मिलकर बच्चे के प्रदर्शन के बारे में बातचीत कर सकें। इस तरह माता-पिता भी बच्चे की पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं।

जब कोई नया बच्चा दाख़िल होता है तो शिक्षक उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी हासिल करते हैं ताकि बच्चा नई जगह पर घुल-मिल सके और कक्षा उसे अपना सके।

अनुशासन

बच्चों के एक बार स्कूल प्रांगण में घुसने के बाद उन्हें स्कूल की छुट्टी के बाद ही निकलने दिया जाता है। पूरे स्कूल में सफ़ाई का पूरा ध्यान रखा जाता है। चूँकि शौचालयों में भरपूर पानी आता है और विद्यार्थी उनका ठीक से इस्तेमाल करना जानते हैं, इसलिए शौचालय साफ़-सुथरे व सही ढंग से संचालित रहते हैं। बच्चे मध्याह्न भोजन योजना के तहत मिलने वाले खाने को बिल्कुल बर्बाद नहीं करते।

अन्य तरीक़े

सभी शिक्षक आपसी तालमेल से काम करते हैं व एक-दूसरे से सीखने में नहीं हिचकिचाते। वे सीखने के उपकरणों व संसाधनों को भी एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं। स्कूल की सुविधाओं और कार्यक्रमों के उद्देश्यों और उनकी महत्ता को



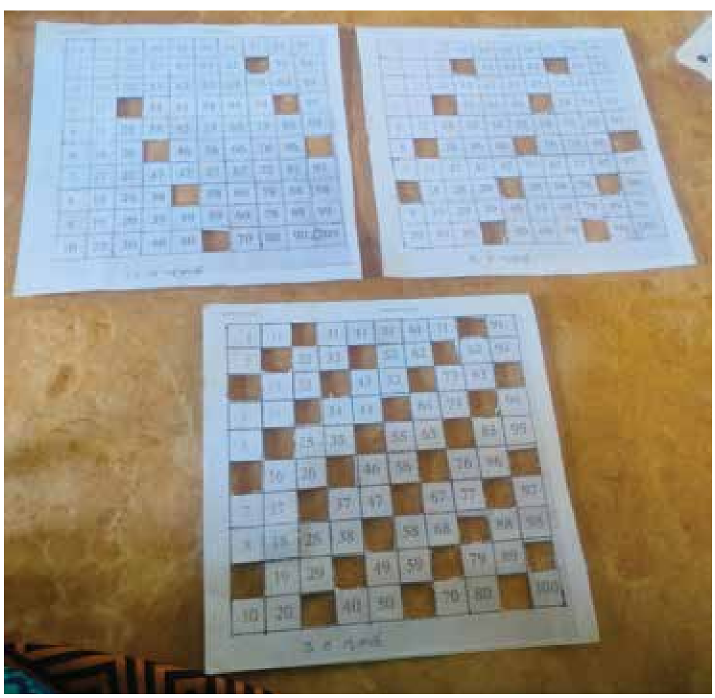
चित्र-1: 1-100 की संख्या वाले चार्ट में कुछ विशिष्ट गुणज संख्याओं का निरूपण।

समझकर वे सुनिश्चित करते हैं कि इनका सही रखरखाव और इस्तेमाल किया जाए। शिक्षकों के मुताबिक़, खाना, दूध, केले, अण्डे और मूँगफली की चिक्की देने से बच्चों में शारीरिक ऊर्जा और उत्साह बढ़ा है।

स्कूल और समुदाय ने बच्चों में बदलाव और उनकी सीखने की उपलब्धियों को प्रशंसा और सम्मान देना शुरू कर दिया है। इसका मुख्य कारण है, बच्चों को समझने के प्रति शिक्षकों के नज़रिए में बदलाव और बच्चों के सीखने की ज़रूरत मुताबिक़ वातावरण की रचना करते हुए उनके सम्पूर्ण विकास हेतु सक्रिय रूप से काम करना। यह स्कूल इस बात का एक असाधारण उदाहरण है कि बच्चों को देखने, उन्हें सम्बोधित करने और उनसे व्यवहार करने का हमारा तरीक़ा उनके सीखने को किस तरह प्रभावित करता है।



चित्र-2 : मापक या संख्या रेखा का उपयोग करते हुए दो संख्याओं का लघुत्तम समापवर्त्य मालूम करना।



चित्र-3 : 100-1 की संख्या वाले चार्टों में गुणज संख्याओं 8 ,3 और 12 का निरूपण।



सुनीता सुरेशराव अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, विजयपुरा, कर्नाटक की ज़िला समन्वयक हैं। वे पहले मानव संसाधन और युवा नेतृत्व विकास के क्षेत्रों में कई मानव विकास एजेंसियों के साथ काम कर चुकी हैं। संगीत सुनना व यात्रा करना उनके शौक़ हैं। उनसे *sunita@premjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : पूनम जैन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

सीखने की कठिनता वाले बच्चों के लिए सामाजिक-भावनात्मक मदद

माला आर. नटराजन

डिस्लेक्सिया क्या है?

ऐसे बच्चे जिन्हें डिस्लेक्सिया है अन्य बच्चों के समान ही हैं, जबकि उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और क्षमताओं में अन्तर दिखता है। यह अन्तर उनकी बुद्धि की वजह से नहीं है (ज़्यादातर बच्चों का आईक्यू औसत या ज़्यादा होता है)। केवल उनके दिमाग़ में न्यूरॉन अलग तरह से जुड़े होते हैं जिससे उनका सूचनाओं को ग्रहण करना और संसाधित करना प्रभावित होता है। इन बच्चों को पढ़ने, लिखने, वर्तनी या गणित हल करने में कठिनाई पेश आती है। इसके साथ ही ये कई कार्यों को करने में जैसे चीजों को व्यवस्थित करना, योजना बनाना, प्राथमिकता तय करना। वे आवेग और भावनात्मक नियंत्रण में भी कठिनाई महसूस करना दर्शा सकते हैं।

एक स्कूल के वातावरण में बच्चा दिन के अधिकांश समय सीखी हुई शैक्षणिक कुशलताओं का प्रदर्शन करता है। जब कोई बच्चा पढ़ने, लिखने, गणित करने, उत्तर लिखने या बोर्ड से उतारने में जूझ रहा होता है तब शिक्षक और माता-पिता इससे तंग होने लगते हैं। उसके सहपाठी और दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते हैं और उस पर हँसते हैं। बच्चे को 'आलसी', 'सुस्त' और 'लूज़र' सम्बोधनों से बुलाने लगते हैं। उस बच्चे के साथ काम करने वाले शिक्षक या मदद करने वाले उसका रिज़ल्ट सुधारने के लिए इन बच्चों से लगातार प्रयास करवाते रहते हैं। इससे परेशान होकर बच्चा इस छवि से बाहर आने और अपने साथियों के साथ जुड़ने का प्रयास करता है। अक्सर ये अनुभव बच्चे के भावनात्मक स्वास्थ्य पर चोट पहुँचाते हैं और सीखने और उपलब्धियों में बाधा की तरह दिखते हैं।

एक बच्चे का भावनात्मक स्वास्थ्य उसके साथियों, परिवार के लोगों, स्कूल में काम करने वाले लोगों और शिक्षकों से प्रभावित होता है। एक बच्चा जो किसी वातावरण में ख़ुश है वह दूसरे में तनावग्रस्त हो जाता है। एक बच्चा जिसे पढ़ने में दिक़्क़त है, वह दौड़ में अच्छा हो सकता है। दौड़ में भाग लेना उसके लिए तनावमुक्त होने का एक ज़रिया बन सकता है और इससे वह ख़ुद में अच्छा महसूस करेगा। दूसरी ओर, पढ़ने में होने वाली कठिनाइयाँ उसके मन पर गहरे घाव छोड़ सकती हैं। जिससे वह बच्चा कक्षा में अपने में सीमित रहने को मजबूर हो जाएगा। यह किसी स्कूल जाते हुए बच्चे के लिए कितनी तनावग्रस्त ज़िन्दगी होगी, जिसका बोझ उसे और दबाएगा।

बच्चे की मदद कैसे करें

आकलन

पुन: कि डिस्लेक्सिया वाला बच्चा कक्षा के दूसरे बच्चों जितना ही बुद्धिमान है, फिर भी उसे उस तरीक़े से पढ़ाना चाहिए जिस तरीक़े से वह समझ सके। यानी कि हर बच्चे के सीखने के अपने विशिष्ट तरीक़े से व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP), जो कि गुणों/ ताक़तों का उपयोग कर बच्चे में आवश्यक कौशल विकसित करती है, सहायक तंत्र का आधार बनती है। ये उपचारी कक्षाएँ व्यवस्थित, संरचित, बहु-आयामी और बहु-बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण से समाहित होती हैं।

यह सहायक कक्षाएँ तब शुरू की जा सकती हैं जब किसी बच्चे में डिस्लेक्सिया की पहचान होती है या उसमें डिस्लेक्सिया होने की शंका होती है। शिक्षक द्वारा बच्चे के क्रियाकलापों का व्यवस्थित अवलोकन (चेकलिस्ट के साथ) उसकी कठिनाइयों का प्रकार या प्रकृति पता करने में मदद कर सकता है। यदि ज़रूरत हो तो (किसी विशेष शिक्षक द्वारा या प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक द्वारा) मानक टूल्स का उपयोग करके बच्चे की मुश्किलों के दायरे का, उनसे जुड़े उप-कौशलों का और उसकी सीमा का पता कर सकते हैं।

यह आकलन रिपोर्ट बहुआयामी हस्तक्षेप को सुगम बनाती है। उपचारी सहायक का आधार होने के अलावा यह रिपोर्ट आवश्यक कौशलों का निर्माण करने वाली और बनाए रखने वाली गतिविधियाँ सुझा सकती है। यह कक्षा में समाहित होने और बोर्ड परीक्षाओं में रियायत पर ध्यान केन्द्रित करती है।

कक्षा और परीक्षा में समाहित होना

कक्षा में समाहित करने से बच्ची को ऐसे उप-कार्यों, जिसमें उसे कौशल हासिल नहीं हैं, में ऊर्जा ख़र्च करने की बजाय सीखने पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए एक बच्ची जो लिखने की कठिनाई से जूझ रही है वह अपनी ज़्यादातर ऊर्जा बोर्ड से कॉपी में उतारने में ही ख़र्च कर रही होगी और वह टॉपिक समझने के लिए उसमें ऊर्जा बहुत ही कम या नहीं ही बची होगी। यदि शिक्षक उसे रिकॉर्डेड नोट्स या फ़ोटो कॉपी किए हुए नोट्स इस्तेमाल करने की इज़ाज़त दे दे तो इससे उसकी ऊर्जा उस विषय को समझने में उपयोग हो सकती है।

इसी तरह से कई परीक्षा बोर्ड हाई स्कूल परीक्षाओं में डिस्लेक्सिया वाले बच्चों को कई तरह की रियायतें देते हैं। कुछ बोर्ड इन बच्चों के लिए गणित का पेपर हटा देते हैं (जिन बच्चों को संख्याओं के साथ कठिनाई होती है) या दूसरी भाषा का पेपर हटा देते हैं (जिन बच्चों को भाषा के साथ कठिनाई है)। अन्य रियायतों में कैलक्यूलेटर का उपयोग, अतिरिक्त समय, अतिरिक्त लेखक या रीडर का उपयोग शामिल है। ये सहायक तंत्र बच्चे को डिस्लेक्सिया से होने वाली परेशानियों के तनाव को कम करते हैं और विद्यार्थी को एक अनुकूल वातावरण देते हैं, जिससे वह दूसरे क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन कर सके।

कक्षा प्रक्रियाएँ और सहपाठियों/ साथियों का संवेदीकरण

स्कूल में बच्चों का जीवन केवल पढ़ाई में प्रदर्शन और परीक्षाओं तक ही सीमित नहीं होता, दिन-प्रतिदिन की गतिविधियाँ भी उसके जीवन में कठिनाइयाँ पैदा करती हैं। उदाहरण के लिए स्कूल में रीड-अलाउड सत्र सीखने-सिखाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डिस्लेक्सिया वाले कुछ बच्चों को भाषा का ज्ञान बहुत अच्छी तरह हो सकता है लेकिन भाषा पढ़ना उनके लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है और ये रीड-अलाउड सत्र इन बच्चों के लिए और भी चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। सामान्य प्रतिक्रिया के तौर पर, डिस्लेक्सिया वाला बच्चा अपने में सीमित हो जाता है, कक्षा में उसकी रुचि बहुत कम हो जाती है और स्कूल छोड़ने की भी स्थिति बन जाती है।

कक्षा में मॉडल रीडिंग हो जाने के बाद में शिक्षक 'फ्रेज़ल रीडिंग' या 'बडी (मित्र) सिस्टम' को अपना सकते हैं। शिक्षक को पढ़ने में जूझ रहे बच्चे को क्रिया के पहले के शब्दों को और क्रिया के बाद के शब्दों को अलग-अलग समूह में रखने (या पढ़ने) के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। परिणामस्वरूप बच्चा एक के बाद एक शब्दों को पढ़ने की बजाय, कुछ छोटे लेकिन अर्थ पूर्ण वाक्य बना पाता है। पहले मॉडल रीडिंग और फिर छोटे-छोटे वाक्यों में ज़ोर से पढ़ने से बच्चे को नए शब्दों और लिखावट पहचानने में मदद मिलती है। 'रीडिंग बडी' समझने के लिए सहायक मंच बनाता है जबकि फ्रेज़ल रीडिंग वाक्यों को छोटे-छोटे समूह में बाँटकर समझने में मदद करती है। यह बच्चे में कक्षा में भागीदारी करने का आत्मविश्वास बढ़ा देता है, बिना इस डर के कि उसे अपनी पढ़ने की कठिनाई के कारण कक्षा में शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। 'बडी सिस्टम' न सिर्फ़ डिस्लेक्सिया वाले बच्चों की मदद करता है बल्कि वह बाक़ी अन्य बच्चों को उनके प्रति ज़िम्मेदार और संवेदनशील भी बनाता है।

यह केवल तभी सम्भव हो सकता है जब बाक़ी बच्चों में शिक्षकों या अभिभावकों द्वारा इन बच्चों के प्रति संवेदीकरण किया जाए। अन्य बच्चों को डिस्लेक्सिया और उससे होने वाली कठिनाइयों के बारे में समझाना, डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के लिए बराबर मौक़ा बनाता है, उनकी ख़ूबियों को पहचान पाता है और 'चिढ़ाए जाने' से बचाता है। यह उन्हें डिस्लेक्सिया वाले बच्चों की अक्षमता के बारे में ठीक समझ देता है और उनके सीखने के लिए उचित सहयोग देने के प्रति सामाजिक ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाता है।

हुनर की पहचान

स्कूल के दिन केवल शैक्षणिक कामों (पढ़ाई) के लिए नहीं होते हैं। यहाँ बच्चे के अन्दर छुपे हुए कई हुनर और क़ाबिलियत के प्रदर्शन और पहचान के कई मौक़े मिलते हैं। यह उसके ख़ुद के महत्त्व का एहसास दिलाता है। अक्सर डिस्लेक्सिया वाले बच्चों का शैक्षणिक प्रदर्शन अच्छा नहीं होने की वज़ह से उनके प्रति एक धारणा बन जाती है, जिसके कारण अन्य हुनर वाली गतिविधियों, जैसे वार्षिक उत्सव, के लिए बच्चों का चयन करते वक़्त भी इनको दरकिनार कर दिया जाता है। शिक्षकों को यह जानना बहुत ज़रूरी है कि डिस्लेक्सिया से प्रभावित बच्चे की छुपी हुई प्रतिभा को उभारने के मौक़े बनाना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उनकी प्रतिभा की पहचान उनमें आत्मविश्वास पैदा करेगी और परिणामस्वरूप उनमें स्कूल के प्रति रुचि बढ़ाएगी। और यह रास्ता उनके सीखने की राह को बेहतर बनाएगा और उनकी ज़रूरतों के कारण होने वाली समस्याओं से उबारेगा।

खेल

सामाजिक-भावनात्मक विकास में खेल एक महत्त्वपूर्ण रास्ता है। एक ऐसा माहौल जो समावेशी खेल को बढ़ावा देता है, यह डिस्लेक्सिया वाले बच्चे को अपने साथियों से प्रबन्धकीय कार्य कौशल सीखने के ज़रूरी मौक़े देगा। अपने आप में आवेग नियंत्रण, लचीली सोच, व्यवस्थापन और स्व-आकलन इत्यादि जैसे कौशल विकसित करने से बेहतर तरीक़ा और क्या हो सकता है?

इसके अलावा, खेल कई साक्षरता कौशलों को सीखने का एक वैकल्पिक तरीक़ा भी है। उदाहरण के तौर पर बच्चों को नए शब्द सुनने के, उन शब्दों के विभिन्न सन्दर्भ में इस्तेमाल सुनने के और इन शब्दों के सही उपयोग करने के मौक़े मिलने से भाषा सीखना बहुत ही जैविक या सहज बनाता है। इसी तरह कम-ज़्यादा, बड़ा-छोटा जैसी अवधारणाएँ खेल का हिस्सा होती हैं। कई खेलों में गिनती करना और स्कोर का रिकॉर्ड रखना होता है, इस तरह ये खेल गणितीय कौशल के मौक़े देते हैं। एक पढ़ाई मुक्त, खेल वाला वातावरण डिस्लेक्सिया वाले बच्चे को विकसित कर सकता है।

हमें कहाँ से शुरू करना चाहिए

उपरोक्त सभी सहायता तभी सम्भव हो सकती है जब बच्चे के सबसे नज़दीकी, अभिभावक और शिक्षक, बच्चे की न्यूरोलाजिकल स्थिति से वाक़िफ़ हों और उसे स्वीकारते हों। इसलिए इसके लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाना बहुत ज़रूरी है, जो इस न्यूरोलॉजिकल स्थिति के सभी पहलुओं को उजागर करे। स्कूल इस क्षेत्र के प्रोफ़ेशनल व्यक्तियों के साथ मिलकर इस तरह के कार्यक्रम कर सकते हैं। जानकार अभिभावक और शिक्षक डिस्लेक्सिया वाले बच्चों की ताक़त पहचानकर उसे सराहने में और कमी को समझकर उनके साथ संवाद करने में सक्षम होंगे। इससे वे न सिर्फ़ एक अच्छा माहौल बना पाएँगे बल्कि सही हस्तक्षेप के लिए पहला क़दम भी उठा पाएँगे।

लोगों (अभिभावक, शिक्षक और स्कूल) की सहयोगी क्रियाएँ, स्वीकरण, सशक्तिकरण और डिस्लेक्सिया वाले बच्चों को बढ़ावा देना, ये सभी मिलकर उनके लिए ज़रूरी सामाजिक-भावनात्मक जगह देंगे जो उन्हें एक उत्पादक और ख़ुश व्यक्ति बनाएँगे।



माला आर. नटराजन एक विशेष शिक्षक हैं। उन्होंने डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण लिया है। वर्तमान में वे मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन (MDA), चेन्नई के साथ काम कर रही हैं। इससे पहले वे सूचना प्रौद्योगिकी में कॉर्पोरेट क्षेत्र में काम कर चुकी हैं। एक जोशीली शिक्षक के रूप में उनका योगदान इस प्रोजेक्ट में प्रायोगिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। उनसे *mala.rn@mdachennai.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अर्पिता व्यास **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

परिवर्तन और कठिनाइयाँ हर किसी के जीवन का, यहाँ तक कि बचपन का भी, हिस्सा होती हैं, ऐसे समय में तनाव और चिन्ता सामान्य प्रतिक्रियाएँ हैं। हम अक्सर मानते हैं कि तनाव और चिन्ता नकारात्मक परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाली भयानक भावनाएँ हैं। हालाँकि, ख़ुशी के अवसरों (जैसे स्कूल की घटनाएँ, छुट्टियाँ या सामाजिक रुचियाँ) की प्रत्याशा भी कभी-कभी तनावपूर्ण हो सकती है। जब कुछ ऐसा होता है जिसके बारे में पूर्वानुमान लगाने या फिर जिसे संशोधित या संरक्षित करने की आवश्यकता होती है, तो बच्चे तनाव और चिन्ता का अनुभव करते हैं। जब उन्हें महत्त्वपूर्ण लगने वाली कोई चीज़, ख़तरे में होती है, तो वे चिन्तित हो जाते हैं।

- शालिनी सोलंकी, भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए कुछ सरल गतिविधियाँ, पेज 50